भीष्म साहनी और यथार्थवाद

डॉ ललिता मीणा,

असिस्टेंट प्रोफेसर,
माता सुन्दरी कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

समाज में साहित्यकार जो भी देखता है उन सबको वह साहित्य में दर्ज करता है। यह यथार्थवाद हमें कबीर के साहित्य में भी नजर आता है कबीर स्वयं कहते हैं – मैं कहता हां आखन देखी, तू कहता कागद की लेखी। इसी प्रकार का भाव हमें प्रेमचंद के साहित्य में भी नजर आता है। साहनी प्रेमचंद के बाद के साहित्यकार रहे और प्रेमचन्द जैसी शैली की झलक इनकी रचनाओं में भी देखने को मिलती है। लेखक अत्यन्त भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। कुछ पीड़ा ऐसी होती है; जिसे केवल महसूस करके ही गम्भीरता से जाना सकता किन्तु लेखक निःशब्द दर्द को भी अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त करते है। इनके अनुसार लेखक द्वारा लिखा गया हर वाक्य समाज की सच्चाई की खोज करता हुआ दिखाई देता है। जीवन की हर सच्चाई को लेखक पाठक तक पहुंचाता है और यह कार्य साहनी जी बखूबी करते हैं।

शब्द–संकेत *संवेदनशील रचनाकार, यथार्थवाद, अधकचरी, निःशब्द, भाग्यवादी, ज्योतिषी, मजदूर दिवस, बेरोजगार, भौगोलिक, धार्मिक, राजनैतिक, बटवारे, दुबले बाबू, बोटी, अजनबीपन, संवेगात्मक, मध्यवर्गीय, महत्वाकांक्षा, आडंबरपूर्ण, त्रास, कुण्ठा, अकेलापन, मानव–मूल्य।*

प्रस्तावना

'यथार्थ' का अर्थ होता है, जो कुछ जैसा है वैसा का वैसा रहना। साहित्य के क्षेत्र में यथार्थ को वास्तविकता से जोड़कर देखा जाता है। इसके अन्तर्गत कुछ भी मनगढ़ंत या बनावटी नहीं होता। साहित्य को समाज का दर्पण भी इसीलिए कहा जाता है क्योंकि समाज ही साहित्यकार को बनाता है। साहित्यकार समाज में रहते हुए और उसे भोगते हुए साहित्य की रचना करता है।

कबीर समाज के दृष्टा थे। वे समाज के बदलते परिवेश से उत्पन्न विभिन्न विषमताओं को अनुभव कर रहे थे। दृष्टा के साथ कबीर भोगता भी थे, इसीलिए समाज के उत्थान की कोशिश करते दिखाई देते हैं। आधुनिक युग के प्रेमचन्द भी समाज का यथार्थ चित्रण करते हैं। समाज में घटित विभिन्न घटनाओं पर इन्होंने अपनी पैनी नजर रखी। समाज में उपलब्ध विभिन्न समस्याओं का यथार्थ वर्णन प्रेमचन्द करते हैं।

भीष्म साहनी प्रेमचंद के बाद के साहित्यकार रहे और प्रेमचन्द जैसी शैली की झलक इनकी रचनाओं में भी देखने को मिलती है। साहनी जी स्वयं इस बात को स्वीकार करते हुए कहते हैं – "प्रेमचन्द का मेरे ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा है। अब भी है। इनकी कहानियों के कुछ पात्र या स्थितियां मुझे हाट करती रही।" साहनी जी की कहानियां यथार्थपरक रही। इनके अनुसार हम बचपन में जो भी अनुभव ग्रहण करते हैं वे सभी हमारी दृष्टि एवं व्यक्तित्व निर्माण में

अहम् भूमिका निभाते हैं। अनुभव के बिना लिखी गई रचनाएं कभी भी गुणवत्तापूर्ण नहीं हो सकती। कोरे विचारों के आधार पर लिखी गई रचनाएं अक्सर "अधकचरी" रह जाती है।[1]

रावल पिंडी में जन्मे भीष्म साहनी लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में अंग्रेज़ी के शिक्षक रहे। बटवारे से पूर्व साहनी जी व्यवसाय के साथ अध्यापन का कार्य भी करते थे। मुम्बई में फिल्मी दुनिया में अपनी पहचान बनाने के लिए गए, जहां उन्हें सफलता नहीं मिली। उन्होंने स्वयं बेरोजगारी की पीड़ा को झेला था।[2]

रोजगार मिलने के बाद फिर से बेरोजगार होकर परिवार पर एक बोझ की तरह रहने की दर्दनाक स्थिति को साहनी जी 'भाग्य रेखा' कहानी में प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में एक ऐसे वर्ग की पीड़ा को उजागर किया है जिसने एक वर्कशाप में कार्य करते समय अपने दाहिने हाथ की बीच की तीन उंगलियाँ खो दी। वह फिर बेरोजगार हो जाता है। उसकी पत्नी तीन बच्चों की जिम्मेदारी उसके ऊपर छोड़कर चली जाती है। युवक स्वयं तो भाई पर आश्रित हो ही जाता है साथ में उसके बच्चों की जिम्मेदारी भी उसके भाई को निभानी पड़ती है। इसी दौरान वह एक बिमारी से ग्रस्त भी हो जाता है। इस प्रकार की बेरोजगारी से ग्रस्त वर्ग और उससे उत्पन्न विभिन्न समस्याओं को साहनी अपनी कहानी में सतही स्तर पर जुड़कर सामने लाते हैं। लेखक उस व्यक्ति से जब पूछता है कि क्या धंधा करते हों तो वह व्यक्ति अपनी पीड़ा को शब्दों में बताने में अपने आप को असमर्थ महसूस करता है। अपनी वर्तमान स्थिति को बताने के लिए वह अपने दोनों हाथ सामने कर देता है। शरीर से अपंग तो हुआ ही, साथ ही में एक बिमारी का शिकार भी हो जाता है। अब यह व्यक्ति भाग्यवादी हो जाता है। बीस–बाईस वर्ष का नवयुवक उस व्यक्ति के हाथ को देखकर उसका भाग्य पढ़ने की कोशिश करता है और कहता है कि 'तुम्हें कहीं से धन प्राप्त होने वाला है।' यजमान ज्योतिषी को अपने बेरोजगार और तीन साल के बच्चों सहित भाई पर आश्रित रहने वाली बात बताता है। अब ज्योतिषी फिर से भाग्य पढ़ने की बात कहता है। अबकी बार ज्योतिषी घबरा जाता है। वह तुरंत कह देता है कि "तेरे भाग्य रेखा नहीं है।" इस दिन 1 मई होती है जोकि विश्व मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है। मजदूर दिवस पर निकले जुलूस को देखकर युवक के मन में फिर से आशा की उम्मीद जागती है। कहानी के अन्त में लेखक उसी बेरोजगार, असहाय युवक के माध्यम से आशा की नई किरण को दिखाता है। युवक ज्योतिषी से कहता है – "फिर देख हथेली, तू कहता है कि भाग्य रेखा कमज़ोर है?" (भाग्य रेखा – भीष्म साहनी)[3]

इस प्रकार लेखक समाज की इस भयावह पीड़ा को अपनी लेखनी से यथार्थपूर्वक प्रस्तुत करता है। लेखक यथार्थ को व्यक्त करने में कहीं भी संकोच नहीं करता है।

भीष्म साहनी ने देश के विभाजन से उपजी पीड़ा को बहुत ही नजदीक की से अनुभव किया। देश का इस प्रकार भौगोलिक, धार्मिक एवं राजनैतिक आधार पर बटवारा बहुत भयावह रहा था। इस त्रासदी के गवाह स्वयं साहनी जी रहे। इस प्रकार की घटना से वे अत्यंत दुखी और आहत हुए थे। वे अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति रहे थे। अमृतसर आते समय वे विभिन्न रूपों में बटवारे से उत्पन्न दर्द को भय के साथ खामोशी से देखते हैं। इस रेलयात्रा के दौरान रोंगटे खड़े कर देने वाली घटनाओं का वर्णन लेखक बेहद यथार्थपूर्ण करते हैं। 'अमृतसर आ गया' कहानी में लेखक देश के विभाजन की त्रासदी का वर्णन अत्यन्त मार्मिक शैली से करते हैं। जैसे एक दृष्टा उस पीड़ा को देखकर महसूस करता है। पाठक को वही पीड़ा महसूस कराने में साहनी जी ने सफलता पाई। लेखक ने उस पीड़ा का बहुत ही सजीव चित्रण किया है। पाठक पढ़ने के

साथ–साथ दृश्यों को देखता और अनुभव करता चलता है। वजीरा बाद स्टेशन से जब गाड़ी आगे बढ़ती है तो शहर में भड़के दंगे की खबर को सुनकर, दूर धूएं के उठते गुब्बार को देखकर 'दुबले बाबू' में डर को स्पष्ट देखा जा सकता था। उसी डिब्बे में तीन पठान भी बैठे थे जो उसे 'बोटी' खाने के लिए बार बार कह रहे थे। बोटी खाने के लिए दबाव बना रहे थे। अगले स्टेशन पर दंगों के बाद की स्थिति को साहनी जी के इन शब्दों में सहज ही स्पष्ट कर दिया है – "अगले स्टेशन पर जब गाड़ी रूकी तो वहां भी सन्नाटा था। कोई परिन्दा तक नहीं फड़क रहा था। हां, एक भिश्ती, पीठ पर पानी की मशक लादे प्लेटफार्म लाँघकर आया और मुसाफिरी को पानी पिलाने लगा। बहुत मार काट हुई है, बहुत लोग मरे हैं। लगता था वह इस मार–काट में अकेला पुण्य कमाने चला आया था।" (अमृतसर आ गया – भीष्म साहनी)[4] प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठक को देश विभाजन की विभिषिका अनुभव करवाने में सक्षम है। यही लेखक की सफलता का पैमाना माना जाता है। लेखक की दृष्टि यथार्थवादी है। जिसके कारण वह स्वयं के द्वारा अनुभव पीड़ा को अपनी रचना में ज्यों का त्यों उतार सकता है।

'वाङ्चू'[5] कहानी में भी भीष्म साहनी अपनी यथार्थवादी दृष्टि का परिचय देते दिखाई दिये हैं। वाङ्चू एक चीनी छात्र की कहानी है। यह भारत में अपने वृद्ध प्रोफेसर तान–शान के साथ आया था। तान–शान हिन्दी अंग्रेजी भाषा का अध्ययन कर वापस अपने देश लौट गए। वाङ्चू यही भारत में ही रह गया। सालों भारत में रहा और अध्ययन का कार्य करता रहा।

चीन में उसका एक भाई था। उससे अब कोई सम्पर्क नहीं रहा था। लगभग 15 वर्ष वाङ्चू भारत में ही रहा। लगातार लम्बे समय तक एक स्थान पर रहने से उस स्थान के साथ एक संबंध सा बन जाता है। एक लगाव हो जाता है। यहाँ के लोग भी उसके साथ अपनेपन जैसा व्यवहार करने लगते हैं। पराये लोगों के बीच वाङ्चू को कभी भी अजनबीपन नहीं लगा। उसे ये लोग अपने ही लगते थे। आगे का जीवन भी वह यहीं पर रह कर काटना चाहता है। अपनों से दूर विदेश में रहने की समस्याओं को लेखक बखूबी जानता है, इसीलिए वह वाङ्चू को अपने देश वापिस लौटने की सलाह बार–बार देता रहता है।

इस समय भारत और चीन में संपर्क स्थापित हो रहा था। वाङ्चू के मन में वैसे ही अपने देश जाने का ख्याल आया। वह अपने देश केवल घूमने जाना चाहता था इसीलिए वह अपना सामान यहीं सारनाथ में छोड़कर जाता है। चीन में दो वर्ष बिताए किन्तु उसका मन यहाँ नहीं लग रहा था। उसे जो अपनापन भारत में मिलता था वैसा अपनापन उसे चीन में नहीं मिल रहा था। अपना ही देश उसे अजनबी जैसा लगता था इसीलिए वह फिर भारत में लौटकर आ जाता है।

भारत आते ही दो दिन बाद भारत और चीन के संबंधों में तनाव पैदा हो गया। चीन एवं भारतीय सैनिकों के बीच हुई मुठभेड़ में दस भारतीय सैनिक मारे गये। इसी वजह से वाङ्चू को अब सब शक की नजर से देखने लगे थे। पुलिस स्टेशन बुलाकर उससे पूछताछ की गई। भारत और चीन के बीच युद्ध छिड़ जाता है। वाङ्चू को हिरासत में ले लिया गया और बनारस भेज दिया गया। जिस अजनबीपन से भाग कर वाङ्चू अपने ही देश चीन से भारत आया वही देश अब उसे शत्रू की नजर से देख रहा था।

वाङ्चू एक भावुक प्रवृत्ति का व्यक्ति था जो भी उससे प्रेम से बात करता उसमें असीम विश्वास रखने लग जाता। वह थोड़ा संकोची प्रवृत्ति का था। अपने मन की बात किसी से शब्दों में नहीं कहता था। लेखक उसकी इस प्रवृत्ति से परिचित था इसीलिए उसकी चिंता भी करता है। उसे लगता है यह व्यक्ति अपने देश में ही सुरक्षित रह सकता है। यहां अभी तो सभी उसे अपना मान कर अच्छा व्यवहार कर रहे हैं लेकिन

कभी परिस्थितियां विपरीत हो गई तो देश में उसके साथ बुरा व्यवहार भी हो सकता है। लेखक इस प्रकार की समस्या को संवेगात्मक तरीके से उजागर करते हैं। जैसे ही भारत और चीन के संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है वैसे ही वाङ्चू के प्रति लोगों का व्यवहार भी बदल जाता है। वाङ्चू का वर्षों में अर्जित अध्ययन कार्य टीका टिप्पणी के रूप में एक संदूक में बंद था। वाङ्चू की वर्षों की जमा पूंजी टिप्पणियां और लेखादि की भी छानबीन की जाती है। वह पुलिस वालों से उन्हें मांगने की गुजारिश करता है। चूंकी चीनी भाषा यहाँ किसी को भी नहीं आती थी इसलिए उसे जांचने के लिए दिल्ली भेज दिया गया था। वाङ्चू इसी के सहारे भारत में रह रहा था। इसमें उसकी जान बसती थी। उसके बिना वह अधमरा सा हो गया था। उसका मन अब कहीं नहीं लग रहा था। साल बाद उसे आधे अधूरे कागज ही प्राप्त होते हैं।

अब वाङ्चू की तबियत ज्यादा ही खराब हो गई थी। लग रहा था अपनी पूंजी पाते ही वह ठीक हो जाएगा किन्तु पूंजी के नाम पर उसे केवल एक पूरा निबंध और टिप्पणियां ही मिली थी। इससे वह और भी आहत् हुआ और धीरे–धीरे उसकी सासें भी थम गई। यह कहानी विस्थापित चीनी नागरिक के अतीत और अकेलेपन के यथार्थ को प्रस्तुत करती है। किस प्रकार वह अकेला रहकर, अपने ही समाज से दूर रहकर परिणीती को प्राप्त करता है? यह कहानी वर्तमान में मनुष्य में पनपती निहरिता का साक्षात् दर्शन कराती है।

तत्कालीन समय के मध्यवर्गीय समाज में दिखावे की प्रवृत्ति घर करती जा रही है। इस दिखावे की होड़ में वह अपने जीवन मूल्य को खोता जा रहा है। जीवन मूल्यों के प्रति बढ़ती उदासीनता से साहनी अत्यन्त दुःखी होते हैं। मनुष्य अपने बड़े–बूढ़ों को अनावश्यक वस्तु की तरह देखता है। इस प्रकार की सोच को साहनी जी अपनी प्रसिद्ध कहानी 'चीफ की दावत' में बेहद संवेदनशील एवं चित्रात्मक तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

यह कहानी मध्यवर्गीय व्यक्ति की महत्वाकांक्षा और आडंबरपूर्ण चरित्र का यथार्थ चित्रण करती है। इसमें शामनाथ अपनी पदोन्नति के लिए अपने चीफ को घर पर दावत के लिए आमंत्रित करता है। चूंकि चीफ एक अमेरिकन है। शामनाथ उसे खुश करने के लिए घर की दशा में परिवर्तन करने में लग जाता है। उसकी नज़र में जो भी चीज चीफ के सामने उसके स्टेटस को कम करती है उसे वह छुपाने में लग जाता है। इस प्रकार के वातावरण को लेखक जिस सजीवता से प्रस्तुत करते हैं वह बहुत ही यर्थापरक हैं। जैसे – "शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुर्सत न थी। पत्नी ड्रेसिंग गाउन पहने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाये, मुँह पर फैली हुई सुर्खी और पाउडर को भूले और मिस्टर शामनाथ सिगरेट–पर–सिगरेट फूंकते हुए चीज़ों की फेहरिस्त हाथ में थामें, एक कमरे से दूसरे कमरे में जा रहे थे। "(चीफ की दावत – भीष्म साहनी)[6]

मध्यवर्गीय परिवार में बनावटी जीवन के प्रति बढ़ती रूची को साहनी जी ने बड़ी इमानदारी से चित्रित किया है। आपसी बोलचाल में विदेशी भाषा अर्थात् अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी एक दिखावा है क्योंकि उनकी मातृभाषा तो पंजाबी है किन्तु फिर भी वे अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी का प्रयोग वे प्रयास करके नहीं सहज ही करते हैं। इससे साफ लगता है कि दिखावा मध्यवर्गीय परिवार का सहज आचरण हो गया है। यह मध्यवर्गीय परिवार की विडम्बना है कि वह अपनी संस्कृति और पहचान को छुपाने से अपने आप को सभ्य एवं पढ़ा लिखा समझता है। अपनी संस्कृति के प्रति इस प्रकार की हीन भावना बड़ी ही पीड़ादायक होती है, जिसे साहनी जी बखूबी समझते हैं। घर में देसी विचारों वाली

बूढ़ी माँ को भी वे अपने चीफ की पहुंच से दूर रखना चाहते हैं। इसके लिए तरह–तरह की तरकीब सोचने लग जाते हैं। फालतू सामान की तरह माँ को भी कहीं छुपाना चाहता है। जबकि इसी मां के त्याग एवं परिश्रम के कारण वह आज चीफ़ के यहां नौकरी कर रहा है। शामनाथ अपनी माँ के उस बलिदान पर खीज कर माँ को चुप रहने के लिए मजबूर कर देता है। मध्यवर्गीय परिवार की इस दमघोटू सोच को साहनी जी बड़ी ही इमानदारी से यथार्थपूर्वक प्रस्तुत है।

शामनाथ के द्वारा अपनी माँ को चीफ से दूर रखने के लिए कोठरी में बंद करने की शर्मनाक सोच को साहनी जी ने निम्न शब्दों में प्रस्तुत किया है – "मां से कहें कि जल्दी ही खाना खा के शाम को अपनी कोठरी में चली जाए। मेहमान कहीं आठ बजे आयेंगे। इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।" (चीफ की दावत – भीष्म साहनी)[7]

इसकी माँ को सोते हुए खर्राटें आते हैं। वह अपनी माँ की उपस्थिति का अहसास तक अपने चीफ को होने नहीं देना चाहता। इस कारण वह अपनी माँ को सोने के लिए मना करता है और कहता है – "तो इन्हें कह देंगे कि अन्दर से दरवाजा बंद कर ले। मैं बाहर से ताला लगा दूंगा। या मां को कह देता हूं कि अन्दर जाकर सोए नहीं, बैठी रहे, और क्या?" (चीफ की दावत–भीष्म साहनी)[8] मध्यवर्गीय परिवार की इस प्रकार की घृणास्पद सोच को साहनी जी यथार्थपूर्ण प्रस्तुत करते हैं। समाज की इस सोच को डॉ प्रकाश ड्डष्ण देव घुमाल गहराई से समझते हैं और कहते हैं मध्यवर्गीय परिवार बनावटी जीवन शैली के दिखावे की वृत्ति के कारण अपनी पुरानी पीढ़ी की माँ की सहज साधारण जीवन शैली से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते।

साहनी मध्यवर्गीय परिवार की बदलती मानसिकता और जन्म लेता त्रास, कुण्ठा, अकेलापन, दिखावा, चिड़चिड़ाहट, संबंधों के प्रति असंवेदनशीलता की तरफ विशेष सजग है। वे इन सभी समस्याओं को इमानदारी से रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं। इनके अनुसार लेखक द्वारा लिखा गया हर वाक्य समाज की सच्चाई की खोज करता हुआ होता है। जीवन की हर सच्चाई को लेखक पाठक तक पहुंचाता है और यह कार्य साहनी जी बखूबी करते हैं।

वे आधुनिक सोच वाली नई पीढ़ी और मानवीय संवेदनाओं को सहेजने वाली पुरानी पीढ़ी में तालमेल बैठाने का प्रयास करते हैं। नए जीवन मूल्यों को गढ़ने का प्रयास करते हैं। बूढ़ी माँ अपने बच्चे की बदलती जीवन शैली में खुद को रूकावट समझने लगती है। इसलिए वह हरिद्वार में रहने की बात करती है। किन्तु इस समय शामनाथ को यह बात समझ में आ जाती है कि बड़े बुजुर्गों के साये में ही वे अपना जीवन सहजता से निर्वाह कर सकते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक विपन्नता, झूठा दिखावा, अन्तर्मन के द्वंद्व को साहनी जी निसंकोच व्यक्त करते हैं। अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम रखना चाहिए। वह कभी किसी के विकास में रूकावट नहीं हो सकती। इस सच्चाई को भी साहनी जी ने कहानी में स्पष्ट किया।

विदेशी चीफ जब शामनाथ की माँ से मिलता है तो वह उनके गीतों से बेहद प्रभावित होता है। उनके द्वारा बनाई नई फुलकारी वाली चादर तो उनको आनंदित कर देती है। शामनाथ जिन चीजों को अपनी पदोन्नति में रूकावट समझ रहा था, वही उसके पदोन्नति में सहायक हो जाती है। यह भी हमारे जीवन की सच्चाई है जिसे लेखक कहानी में प्रस्तुत करते हैं।

भीष्म साहनी मानवतावादी संवेदनशील रचनाकार है। 'गंगो का जाया' कहानी एक निम्न मध्यवर्गीय मजदूर की कहानी है। गंगो शहर में एक ईमारत में मजदूरी का काम करती है। वह गर्भवती है। उसका पेट काफी फूला हुआ था। इस कारण वह गारे से भरी परात को उठा नहीं

पा रही थी। गर्भस्थ महिलाओं को हमारे समाज में ईश्वर के समान समझा जाता है उसके प्रति विशेष संवेदना रखते हैं। क्रूर से क्रूर व्यक्ति भी उसके प्रति आत्मीयता का व्यवहार करता है। इस इमारत के ठेकेदार के अनुसार वह महिला कोई संवेदना की हकदार भी नहीं है तभी तो कह देता है कि "पहले पेट खाली करके आओ फिर काम मिलेगा।" (गंगो का जाया – भीष्म साहनी)[9] ठेकेदार बिना संकोच के उसे काम से निकाल देता है।

हृदयहीन होते मनुष्य के इस स्वरूप को साहनी जी यथार्थपूर्ण प्रस्तुत करते हैं। इसी के साथ गांव से शहर विस्थापित वर्ग की समस्याओं को साहनी जी बड़ी बारीकी से व्यक्त करते हैं। गंगो स्वयं भी मजदूरी करने में असमर्थ है, किन्तु वह गांव से अपने पति एवं छः साल के बच्चे के साथ शहर में आई है। यदि वह मजदूरी नहीं करेगी तो तीन लोगों के पेट भरने की जिम्मेदारी अकेले उसके पति घीसू पर आ जाएगी। एक मज़दूरी से तीन लोगों का पालन पोषण करना कठिन होगा। इस समस्या को हल करने के लिए घीसू अपने छोटे से बच्चे रीसा से भी काम करवाने के लिए तैयार हो जाता है।

मजदूर वर्ग के इस संघर्ष भरे जीवन की सच्चाई को साहनी जी ज्यों का त्यों प्रस्तुत करते हैं। इनकी कहानी में सच्चाई को पाठक तक पहुंचाने का जुनून स्पष्ट दिखाई देता है। रीसा की उम्र अभी खेलने कूदने की है। किन्तु अब उसके पिता उसका पालन पोषण करने में असमर्थ है इसलिए वह उसे मोची का काम सीखने के लिए अपने ही गांव के व्यक्ति गणेशी के पास भेज देता है। बच्चा यह सब खेल ही समझ रहा था। एक दिन गणेशी उसे नियत स्थान पर नहीं मिलता तो यही से उसका मजदूर का जीवन शुरू हो जाता है। लोग अब उसे बच्चे के नजरिये से न देखकर उसे मजदूर की नजर से देखने लगते हैं और वैसे ही काम की उम्मीद भी लगाते हैं।

रीसा को अभी भी अपने जीवन का नया अध्याय समझ में नहीं आया था। वह वापिस अपने घर जाने लगता है तो वह घर लौटने का रास्ता भी भूल जाता है। अब वह इस दुनिया में असहाय हो जाता है। रीसा जब घण्टों तक घर नहीं पहुंचता तो घीसू अपने मन को समझाते हुए कहता है – "मुझे कौन काम सिखाने आया था? सभी गलियों में ही सीखते हैं। मरेगा नहीं, घीसू का बेटा है, कभी न कभी तुझे मिलने आ जायेगा।" (गंगो का जाया – भीष्म साहनी)[10] बाल काल से ही मजदूर के बच्चे अपना ही बोझ उठाने को तैयार हो जाता हैं। मजदूर के जीवन की हकीकत को साहनी जी ने बिना किसी लार लपेट पाठक के सामने रख दिया है। इस प्रकार की संवेदनशील हकीकत को प्रस्तुत करने में साहनी जी निपुण हैं। निम्न मध्यवर्गीय परिवार की सच्चाई को साहनी जी सहजता से स्पष्ट करते हैं।

पाठक इनकी कहानी को पढ़ते ही सन्न हो जाता है। समाज में गिरते मानवमूल्यों पर रचनाकार की गहरी चिन्ता है जिन्हें बचाने के लिए वह तत्पर हैं। साहनी जी समाज के सच्चे दृष्टा एवं यथार्थवादी रचनाकार हैं। वे अपनी कहानियों में समाज के प्रत्येक वर्ग की पीड़ा महसूस कराने में पूर्णतः सफल रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1) दस प्रतिनिधि कहानियां : भीष्म साहनी
2) हिन्दी सहित्य कोश भाग–2 नामवाची शब्दावली प्रधान संपादक – धीरेन्द्र वर्मा पृष्ठ संख्या–413
3) अंताक्षरी कहानी माला – 33, भाग्य रेखा : भीष्म साहनी
4) अमृतसर आ गया – भीष्म साहनी
5) वाङ्चू– भीष्म साहनी

6) चीफ की दावत–भीष्म साहनी

7) चीफ की दावत–भीष्म साहनी

8) चीफ की दावत–भीष्म साहनी

9) गंगो का जाया – भीष्म साहनी

10) गंगो का जाया – भीष्म साहनी

सहायक ग्रंथ

1) हिन्दी सहित्य कोश भाग–2 नामवाची शब्दावली प्रधान संपादक – धीरेन्द्र वर्मा

2) हिन्दी सहित्य का वैज्ञानिक इतिहास द्वितीय खण्ड – गणपति चन्द्रगुप्त लोक भारती प्रकाशन

3) भीष्म साहनी का नाट्य साहित्य : डॉ० प्रकाश कृष्णदेव घुमाल

4) प्रतिनिधि कहानियां : भीष्म साहनी